सृजन

भाग 1

कक्षा 11 के लिए सृजनात्मक लेखन और अनुवाद की पाठ्यपुस्तक

SRIJAN

PART 1

Textbook in Creative Writing and Translation for Class XI

11132

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

prelimsCQ_2.indd 1 29-11-2018 15:27:22

प्रथम संस्करण
अक्तूबर 2008 कार्तिक 1930

पुनर्मुद्रण
मई 2017 ज्येष्ठ 1939
जनवरी 2019 पौष 1940

PD 5T RSP

₹ 210.00

एन.सी.ई.आर.टी. वाटरमार्क 80 जी.एस.एम. पेपर पर मुद्रित।

प्रकाशन प्रभाग में सचिव, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविंद मार्ग, नयी दिल्ली 110 016 द्वारा प्रकाशित तथा बंगाल ऑफ़सेट वर्क्स, जी-181, सैक्टर-63, नोएडा - 201301 (उ.प्र.) द्वारा मुद्रित।

ISBN 978-81-7450-899-7

एन.सी.ई.आर.टी. के प्रकाशन प्रभाग के कार्यालय

एन.सी.ई.आर.टी. कैंपस
श्री अरविंद मार्ग
नयी दिल्ली 110 016 फोन : 011-26562708

108, 100 फीट रोड
हेली एक्सटेंशन, होस्डेकेरे
बनाशंकरी III इस्टेज
बैंगलूर 560 085 फोन : 080-26725740

नवजीवन ट्रस्ट भवन
डाकघर नवजीवन
अहमदाबाद 380 014 फोन : 079-27541446

सी.डब्ल्यू.सी. कैंपस
निकट: धनकल बस स्टॉप पनिहटी
कोलकाता 700 114 फोन : 033-25530454

सी.डब्ल्यू.सी. कॉम्प्लैक्स
मालीगांव
गुवाहाटी 781021 फोन : 0361-2674869

प्रकाशन सहयोग/Publication Team

अध्यक्ष, प्रकाशन प्रभाग	: *एम. सिराज अनवर*
Head, Publication Division	: *M. Siraj Anwar*
मुख्य संपादक	: *श्वेता उप्पल*
Chief Editor	: *Shveta Uppal*
मुख्य व्यापार प्रबंधक	: *गौतम गांगुली*
Chief Business Manager	: *Gautam Ganguly*
मुख्य उत्पादन अधिकारी	: *अरुण चितकारा*
Chief Production Officer	: *Arun Chitkara*
संपादक	: *मरियम बारा*/Mariam Bara
Editor	: विजयम शंकरनारायणन/ *Vijayam Sankaranarayanan*
सहायक उत्पादन अधिकारी	: *ए. एम. विनोद कुमार*
Assistant Production Officer	: *A. M. Vinod Kumar*

आवरण, सज्जा
श्वेता राव

Cover and Layout
Shweta Rao

चित्र
इरफ़ान

Illustrations
Irfan

आमुख

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (2005) सुझाती है कि बच्चों के स्कूली जीवन को बाहर के जीवन से जोड़ा जाना चाहिए। यह सिद्धांत किताबी ज्ञान की उस विरासत के विपरीत है जिसके प्रभाववश हमारी व्यवस्था आज तक स्कूल और घर के बीच अंतराल बनाए हुए है। नयी राष्ट्रीय पाठ्यचर्या पर आधारित पाठ्यक्रम और पाठ्यपुस्तकें इस बुनियादी विचार पर अमल करने का प्रयास हैं। इस प्रयास में हर विषय को एक मज़बूत दीवार से घेर देने और जानकारी को रटा देने की प्रवृत्ति का विरोध शामिल है। आशा है कि ये कदम हमें राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986) में वर्णित बाल-केंद्रित व्यवस्था की दिशा में काफ़ी दूर तक ले जाएँगे।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा यह भी सुझाती है कि उच्चतर माध्यमिक स्तर पर ज़्यादा से ज़्यादा विकल्प उपलब्ध कराए जाएँ। इसे ध्यान में रखते हुए परिषद् ने कुछ ऐसे नए विषय क्षेत्रों से विद्यार्थियों का परिचय कराने का निश्चय किया जो सृजनात्मक दृष्टिकोण और अंतरविषयी समझ विकसित करने में विशेष रूप से सहायक हों। उच्चतर माध्यमिक स्तर पर इस तरह की समझ और कौशल विकसित करने में सृजनात्मक लेखन और अनुवाद की महत्त्वपूर्ण भूमिका हो सकती है। बहुभाषी सामग्री से भरपूर यह पुस्तक युवा पीढ़ी को इस क्षेत्र में आगे आने के लिए एक अनूठा अवसर दे सकती है। एन.सी.ई.आर.टी. यह उम्मीद करती है कि इस पुस्तक का यह नवाचारमूलक दृष्टिकोण अध्यापकों और विद्यार्थियों दोनों को इस बात के लिए प्रेरित करेगा कि वे भाषा और साहित्य संबंधी अपनी जानकारी को रोज़मर्रा के सामाजिक अनुभवों और उनसे जुड़े विमर्शों के साथ समन्वित कर सकें।

इस प्रयत्न की सफलता अब इस बात पर निर्भर है कि स्कूलों के प्राचार्य और अध्यापक बच्चों को कल्पनाशील गतिविधियों और सवालों की मदद से सीखने और सीखने के दौरान अपने अनुभव पर विचार करने का कितना अवसर देते हैं। हमें यह मानना होगा कि यदि जगह, समय और आज़ादी दी जाए तो बच्चे बड़ों द्वारा सौंपी गई सूचना-सामग्री से जुड़कर और जूझकर नए ज्ञान का सृजन करते हैं। शिक्षा के विविध साधनों एवं स्रोतों की अनदेखी किए जाने का प्रमुख कारण पाठ्यपुस्तक को परीक्षा का एकमात्र आधार बनाने की प्रवृत्ति है। सर्जना और पहल को विकसित करने के लिए ज़रूरी है कि हम बच्चों को सीखने की प्रक्रिया में पूरा भागीदार मानें और बनाएँ, उन्हें ज्ञान की निर्धारित खुराक का ग्राहक मानना छोड़ दें।

यह उद्देश्य स्कूल की दैनिक ज़िंदगी और कार्यशैली में काफ़ी फेरबदल की माँग करते हैं। दैनिक समय-सारणी में लचीलापन उतना ही ज़रूरी है जितना वार्षिक कैलेंडर के अमल में चुस्ती, जिससे शिक्षण के लिए नियत दिनों की संख्या हकीकत बन सके। शिक्षण और मूल्यांकन की विधियाँ भी इस बात को तय करेंगी कि यह पाठ्यपुस्तक स्कूल में बच्चों के जीवन को

मानसिक दबाव तथा बोरियत की जगह खुशी का अनुभव बनाने में कितनी प्रभावी सिद्ध होती है। बोझ की समस्या से निपटने के लिए पाठ्यक्रम निर्माताओं ने विभिन्न चरणों में ज्ञान का पुनर्निर्धारण करते समय बच्चों के मनोविज्ञान एवं अध्यापन के लिए उपलब्ध समय का ध्यान रखने की पहले से अधिक सचेत कोशिश की है। इस कोशिश को और गहराने के यत्न में यह पाठ्यपुस्तक सोच-विचार और विस्मय, छोटे समूहों में बातचीत एवं बहस और हाथ से की जाने वाली गतिविधियों को प्राथमिकता देती है।

एन.सी.ई.आर.टी. इस पुस्तक की रचना के लिए बनाई गई पाठ्यपुस्तक निर्माण समिति के परिश्रम के लिए कृतज्ञता व्यक्त करती है। परिषद् इस पुस्तक के मुख्य सलाहकार श्री अशोक वाजपेयी, सलाहकार प्रोफ़ेसर अरुण कमल तथा निगरानी समिति द्वारा विशेष आमंत्रित सदस्य सुश्री राजी सेठ की आभारी है। इस पाठ्यपुस्तक के विकास में कई शिक्षकों ने योगदान किया, इस योगदान को संभव बनाने के लिए हम उनके प्राचार्यों के आभारी हैं। हम उन सभी संस्थाओं और संगठनों के प्रति कृतज्ञ हैं जिन्होंने अपने संसाधनों, सामग्री तथा सहयोगियों की मदद लेने में हमें उदारतापूर्वक सहयोग दिया। हम माध्यमिक एवं उच्च शिक्षा विभाग, मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा प्रोफ़ेसर मृणाल मीरी एवं प्रोफ़ेसर जी.पी. देशपांडे की अध्यक्षता में गठित निगरानी समिति (मॉनिटरिंग कमेटी) के सदस्यों को अपना मूल्यवान समय और सहयोग देने के लिए धन्यवाद देते हैं। व्यवस्थागत सुधारों और अपने प्रकाशनों में निरंतर निखार लाने के प्रति समर्पित एन.सी.ई.आर.टी. टिप्पणियों एवं सुझावों का स्वागत करेगी जिनसे भावी संशोधनों में मदद ली जा सके।

निदेशक
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और
प्रशिक्षण परिषद्

नयी दिल्ली
सितंबर 2008

Foreword

The National Curriculum Framework (NCF), 2005, recommends that children's life at school must be linked to their life outside the school. This principle marks a departure from the legacy of bookish learning which continues to shape our system, and causes a gap between the school, home and community. The syllabi and textbooks developed on the basis of NCF signify an attempt to implement this idea. They also attempt to discourage rote learning and the maintenance of sharp boundaries between different subject areas. We hope these measures will take us significantly further in the direction of a child-centered system of education outlined in the National Policy on Education (1986).

One of the key recommendations of the NCF is to increase the number of options available at the senior secondary level. Following this recommendation, the National Council of Educational Research and Training (NCERT) has decided to introduce certain new areas highlighted in the NCF for their potential for encouraging creativity and interdisciplinary understanding. Creative Writing and Translation constitute a major example of the space available for interdisciplinary understanding and skill development in the higher secondary classes. The present textbook attempts to provide a unique opportunity to the young for pursuing this area in a bilingual text. NCERT hopes that the innovative approach of this textbook will inspire both teachers and students to combine the knowledge of language and literature with everyday social experiences and the discourses associated with them.

This initiative can succeed only if school principals, parents and teachers recognise that given space, time and freedom, children generate new knowledge by engaging with the information passed on to them by adults. Treating the prescribed textbook as the sole basis of examination is one of the key reasons why other resources and sites of learning are ignored. Inculcating creativity and initiative is possible if we perceive and treat children as participants in learning, not as receivers of a fixed body of knowledge.

These aims imply considerable change in school routines and mode of functioning. Flexibility in the daily time-table is as necessary as rigour in implementing the annual calendar so that the required number of teaching days is actually devoted to teaching. The methods used for teaching and evaluation will also determine how effective this textbook proves for making children's life at school a happy experience, rather than a source of stress or boredom. Syllabus designers have tried to address the problem of curricular burden by restructuring and reorienting knowledge at different stages with greater consideration for child psychology and the time available for teaching. The textbook attempts to enhance this endeavour by giving higher priority

and space to opportunities for contemplation and wondering, discussion in small groups, and activities requiring hands-on experience.

NCERT appreciates the hard work done by the syllabus and textbook development committee. The work for developing this interactive textbook was challenging and the painstaking efforts by its Chief Advisor, Shri Ashok Vajpayi and its Advisor, Professor Arun Kamal are praiseworthy. The Council is grateful to Ms. Rajee Seth, the special invitee of the monitoring committee. We are indebted to the institutions and organisations, which have generously permitted us to draw upon their resources, materials and personnel. We are especially grateful to the members of the National Monitoring Committee appointed by the Department of Secondary and Higher Education, Ministry of Human Resource Development, under the Chairpersonship of Professor Mrinal Miri and Professor G. P. Deshpande, for their valuable time and contribution. As an organisation committed to systemic reform and continuous improvement in the quality of its products, NCERT welcomes comments and suggestions which will enable us to undertake further revision and refinement.

DIRECTOR
National Council of Educational
Research and Training

New Delhi
September 2008

यह पुस्तक

बच्चे सहज ही सृजनात्मक होते हैं। उनकी यह सृजनात्मकता तरह-तरह से अभिव्यक्त होती है। भाषा रचने की तो उनमें स्वाभाविक क्षमता होती है। अगर उनकी इस क्षमता की पहचान शुरुआत में ही हो जाए तो इसे और निखारा जा सकता है। खासतौर से उच्चतर माध्यमिक स्तर तक आते-आते अभिव्यक्ति के नए माध्यमों की बारीकियों से परिचय हो तो विद्यार्थियों की रचनात्मकता नए आयाम लेगी। साथ ही वे भाषा साहित्य को रोज़मर्रा के सामाजिक मुद्दों और विमर्शों से जोड़कर देखने में समर्थ हो सकेंगे। ऐसे में इस पुस्तक का साथ उनमें अच्छा लिख सकने का विश्वास भर सकता है।

इस पुस्तक का निर्माण एक बहुभाषी बच्चे की परिकल्पना के साथ हुआ है। इसमें चार इकाइयाँ हैं। प्रत्येक इकाई में हिंदी और अंग्रेज़ी दोनों भाषाओं में समानांतर सामग्री दी गई है, वह भी एक ही ज़िल्द में। एन.सी.ई.आर.टी. ने पहली बार ऐसी पाठ्यपुस्तक का निर्माण किया है। दोनों ही भाषाओं में स्वतंत्र रूप से अध्यायों को लिखा गया है। विद्यार्थियों से यह अपेक्षा होगी कि वे दोनों भाषाओं में लिखी सामग्री को पढ़ें ताकि उनकी अभिव्यक्ति दोनों भाषाओं में आसानी से आवाजाही कर सके। अनुवाद कौशल में भी यह सहायक रहेगा। इसके माध्यम से कम से कम दो भाषाओं की सृजनात्मक विशेषताओं से विद्यार्थी एकसाथ रू-ब-रू होंगे। इसमें दी गई गतिविधियाँ भी दोनों भाषाओं की सामग्री को जोड़ती हैं जो बहुभाषी संदर्भ रचने में समर्थ हो सकती है। अनुवाद इसका एक ज़रूरी हिस्सा है। इसके माध्यम से विद्यार्थी अनुवाद में सृजनात्मक अभिव्यक्ति के प्रति सचेत हो सकेंगे।

सृजनात्मकता हममें ऊर्जा भरती है। यही हमें विभेदों का आदर करना सिखाती है और विभिन्नता और अनेकता में रस लेना भी। हरेक व्यक्ति सर्जनात्मक होता है, बच्चे तो बड़ों से भी ज़्यादा। सींची जाने पर सृजनात्मकता अंकुरण बन प्रत्येक विद्यार्थी के स्वतंत्र विकास का ज़रिया हो सकती है। बढ़िया ढंग से लिखे गए शब्द दुनिया को नए ढंग से रचने की ऊर्जा देते हैं। ज़ाहिर है रचने की इस ऊर्जा को शुरुआत में ही दिशा मिल जाए तो आने वाले कल का इतिहास बिलकुल नया और ताज़ा होगा क्योंकि लिखित शब्द दस्तावेज की तरह होते हैं। इनका प्रभाव भी बिलकुल भिन्न होता है।

यह पुस्तक सृजनात्मकता संबंधी बनी-बनाई धारणा में बदलाव की माँग करती है। रचने की कला किसी जन्मजात प्रतिभा की मोहताज़ नहीं होती। वह कहीं भी और कभी भी पनप सकती है, क्योंकि सबके भीतर वह बीज मौजूद है। यह पुस्तक उन्हें पहचानने का एक अवसर दे सकती है।

आज अलग-अलग क्षेत्रों, रूप विधा के साथ-साथ अलग-अलग अनुशासनों में ऐसा लेखन हो रहा है जिसकी नयी भाषा और उसका नया व्याकरण सृजनात्मकता की नयी संभावनाओं की ओर ले जाता है। साहित्य के साथ-साथ अनुवाद और मीडिया का क्षेत्र ऐसा ही है। पूरी दुनिया से जुड़ने में ऐसे लेखन की बड़ी भूमिका है। ज़ाहिर है अगर ऐसे सृजनात्मक लेखन से युवाओं/युवतियों की ऊर्जा भी जुड़ती है तो पूरी दुनिया को रचनात्मक ढंग से जुड़ने में मदद मिलेगी।

अनुवाद तो सृजनात्मकता से अभिन्न रूप से जुड़ा हुआ है। दो से अधिक भाषाएँ साधे बिना भारत में जल्दी किसी का काम नहीं चलता। हमारे संदर्भ की बहुभाषिकता रोज़मर्रा की ज़िंदगी से ताल्लुक

रखती है। एक दिन के लिए भी सिर्फ़ एक भाषा में बँधकर रह जाना हमारे लिए संभव नहीं। फिर भी अकसर हम बंद खाँचों में बाँधकर भाषा पढ़ते-पढ़ाते हैं। बोल-चाल में भले ही हम एक भाषा की पंक्ति से शुरू कर दूसरी भाषा की पंक्ति पर खत्म करें–कक्षा में हमारा ज़ोर एकभाषिकता पर रहता है और शुद्धतावादी दृष्टिकोण इस कदर हम पर हावी रहता है कि भाषिक हेल-मेल से हम भरसक परहेज़ ही कर जाते हैं। हर भाषा के अलग-अलग अवयव जानना-समझना ज़रूरी है पर उतना ही ज़रूरी है भाषाओं का गठबंधन/तुलनात्मक अध्ययन। हमारे रोज़मर्रा के अनुभव का हिस्सा है अनुवाद, जिसमें अनुवादक की कल्पनाशीलता और संवेदनशीलता एक बड़ी भूमिका निभाती है, इसीलिए अनुवाद मौलिक रूप में सृजनात्मक होता है। हमारे बहुलतावादी समाज में एकभाषिकता की कृत्रिमता पर एक प्रश्नचिह्न लगाता है यह पाठ्यक्रम, साथ ही भाषिक कौशल के विकास की सम्यक्-व्यापक योजना रखता है।

यह पाठ्यक्रम विद्यार्थियों के मूल्यांकन में समग्र दृष्टिकोण की माँग करता है। यहाँ मूल्यांकन की भूमिका विद्यार्थी की सृजनात्मकता और उनकी सृजनात्मक लेखन संबंधी जानकारी को आकार देकर पैना बनाना है। उनकी रुचि और भावनाओं को रचनात्मक दिशा तलाशने में मदद करना है। इस प्रक्रिया में अध्यापकों को हरेक विद्यार्थी के लिए मूल्यांकन संबंधी अलग-अलग विधियों और औज़ारों को अपनाना होगा। विद्यार्थी की समझ और विकास को जाँचने के लिए उनकी समस्याओं, उनके आत्मविश्वास, उनकी क्षमता को नजदीक से पहचानना होगा।

मूल्यांकन की इस प्रक्रिया में अंकों या 'ग्रेड' द्वारा जाँचने की बजाय संरचनात्मक सुझाव देकर विद्यार्थी की अभिव्यक्ति को असरदार बनाना होगा। यह प्रक्रिया उनके सृजनात्मक विकास में सहायक होगी। इसलिए लिखित परीक्षा मात्र मूल्यांकन में सहायक नहीं हो सकती, लिखित परीक्षा के साथ-साथ विभिन्न तरीकों से विद्यार्थी का निरीक्षण जैसे पोर्टफ़ोलियो में किए गए कार्य, बातचीत, सामूहिक कार्य में साझेदारी, विद्यार्थी के स्वयं के मूल्यांकन को वरीयता देनी होगी। विद्यार्थी की मौलिकता को बनाए रखना मूल्यांकन का सबसे ज़रूरी पक्ष होगा। इसके लिए पुस्तक में दी गई गतिविधियों को तो कराएँ ही, कक्षा की माँग के अनुसार कुछ नयी गतिविधियों की जगह हमेशा बनाएँ।

हमें यह भी याद रखना चाहिए कि रचनात्मक प्रक्रिया किसी रचना से कम महत्वपूर्ण नहीं होती। कुछ रच सकने के अहसास तक पहुँचना या उसे जानना विद्यार्थियों की सृजनात्मक मौलिकता (खासतौर से भाषा में सृजनात्मकता) की पहचान कर उसे सही दिशा देने में सहायक होगा, जो इस पाठ्यक्रम का मुख्य उद्देश्य है।

अध्यापकों के सामने सबसे बड़ी चुनौती यह होगी कि वह हरेक विद्यार्थी से एक तरह की सृजनात्मक क्षमता की अपेक्षा न करे। हर विद्यार्थी की भिन्न और मौलिक क्षमता और रुचि को ध्यान में रखकर ही उन्हें दिशा देना अध्यापकों का दायित्व होना चाहिए। उनकी भूमिका मित्रवत होनी चाहिए ताकि विद्यार्थी, शिक्षक और शिक्षा के बीच एक संवादात्मक रिश्ता बन सके। विद्यार्थी के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण और अभिव्यक्ति की आज़ादी विद्यार्थी के तनाव को कम कर उनके आत्मविश्वास और आत्मसंयम को बढ़ाएगी। यह प्रक्रिया उन्हें अभिव्यक्ति की ऐसी भाषा देने में समर्थ होगी जिससे भाषाओं, कलाओं, संस्कृतियों के बीच का रास्ता बेरोक-टोक, शांतिपूर्ण और मज़बूत हो सकेगा।

About This Book

Children have an innate creative ability which manifests itself in many forms. Their natural flair for creativity in language, if identified early, can lead to further creative growth and enhancement of their skills. Exposure to the nuances of contemporary and diverse forms of creative expression at the Higher Secondary level can facilitate discovery of new dimensions of creative expression in language and literature. The endeavour of this book is therfore to enable students to recognise their talents and write confidently.

Srijan has been developed keeping in view a bilingual child and it is for the first time that NCERT has developed a bilingual book (Hindi and English). There are four units in the book. Each unit has been developed in Hindi as well as in English. These are parallel texts and not exact translations. Students are expected to read both sets of units as this would hone their linguistic abilities in both the languages and would also develop their translation skills. The units in Hindi and English are linked with activities that are numbered in continuation so that students visit both texts and come across enriching examples in both languages. Translation, which is an inherent part of this course, creates a bilingual context. This will also enable the learners to appreciate the fact that translation is also a creative activity.

The book aims to change certain pre-conceived notions related to creative skills, the foremost among which is that creativity is inborn only in some of us. In fact, everyone is creative; children are more so. With proper guidance and training every student's creative potential can be tapped and developed. Creativity teaches us to respect diversity and to derive pleasure in variety. What is required is to give proper direction to the inherent creative energy in students so that a better tomorrow can be scripted. As we all know, a well-written piece has the strength to change/formulate opinions.

Today, creative writing has been revitalised with a spirit of innovation and experimentation. New forms of writing, with their unique expressions and grammar have emerged in the fields of literary writing, translation and media. With the creative use of both language and literature, students will be able to represent and reflect upon contemporary social realities, diverse thoughts, languages and cultures.

The study of two or more languages is essential in India. No person can confine herself or himself to a single language. In schools, however, we study languages as watertight compartments. While conversing we may begin the sentence in one language and end it in another, but in the classroom we emphasise exclusivity and purity. This book attempts to bridge the gap between experienced reality and pedagogical practice by recognising that

although it is important to know the individual features of every language, it is also essential in our multilingual context to look at them comparatively. This can be achieved by introducing students to translation as a creative activity.

The course on Creative Writing and Translation demands that the assessment of the students should be holistic. The role of assessment is to hone the knowledge and skills of creative writing among students, and also to provide direction to their field of interest. On the basis of this the teacher can evolve an individualised approach or strategy appropriate for her/his students. The teacher will also have to identify the problems, ascertain the level of confidence, and capabilities of the students.

The students' assessment should not be made merely in terms of marks or grades; rather, constructive feedback from the teacher would be more effective. Therefore written texts alone are not sufficient as a means of assessment. They should be combined with the teacher's observations and assessment of the student's work throughout the year through portfolios, oral presentations, group-work, students' self-assessment etc. The learner's individual expression should be given due space in the process of assessment.

There are a variety of activities in the book. However, new activities should be created according to the interests and needs/demands of the students. We must remember that the creative process is as important as the product, and the learner should be encouraged to enjoy the process, which is the primary objective of this course.

The inherent challenge before teachers in teaching this discpline lies in the fact that all the students do not have the same level of creativity and understanding. Teachers need to guide the students according to the individual's interest and creativity. The teacher's role in a learner-centered environment is that of a facilitator and friend. This will encourage constant dialogue between the teacher and the student. Also, a positive attitude and freedom of expression will go a long way in lowering the anxiety levels of learners, while raising their self-confidence and self-discipline. This course would provide students with a medium to creatively interact with diverse cultures and languages thereby contributing towards creating harmony and peace.

पाठ्यपुस्तक निर्माण समिति
TEXTBOOK DEVELOPMENT COMMITTEE

मुख्य सलाहकार/CHIEF ADVISOR

अशोक वाजपेयी, *पूर्व अध्यक्ष*, ललित कला अकादमी
Ashok Vajpayi, *Former Chairperson*, Lalit Kala Academy

सलाहकार/ADVISOR

अरुण कमल, *प्रोफ़ेसर*, पटना विश्वविद्यालय, पटना
Arun Kamal, *Professor*, Patna University, Patna

मुख्य समन्वयक/CHIEF COORDINATOR

रामजन्म शर्मा, *प्रोफ़ेसर एवं अध्यक्ष*, भाषा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली
Ram Janma Sharma, *Professor and Head*, Department of Languages, NCERT, New Delhi

सदस्य/MEMBERS

अनामिका, *रीडर*, सत्यवती कॉलेज, दिल्ली
Anamika, *Reader*, Satyawati College, Delhi

अनुराधा, *पी.जी.टी.*, सरदार पटेल विद्यालय, लोधी इस्टेट, नयी दिल्ली
Anuradha, *P.G.T.* , Sardar Patel School, Lodhi Estate, New Delhi

अनुराधा मारवा, *रीडर*, ज़ाकिर हुसैन कॉलेज, नयी दिल्ली
Anuradha Marwah, *Reader*, Zakir Husain College, New Delhi

आनंद प्रधान, *रीडर*, आई.आई.एम.सी., दिल्ली
Anand Pradhan, *Reader*, IIMC, Delhi

इंदु बाला, *पूर्व प्रधानाचार्य*, डी.टी.ई.ए. स्कूल, आर.के. पुरम्, नयी दिल्ली
Indu Bala, *Former Principal*, DTEA School, R.K. Puram, New Delhi

देवेंद्रराज अंकुर, *प्रोफ़ेसर*, राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय, नयी दिल्ली
Devendraraj Ankur, *Professor*, National School of Drama, New Delhi

नूतन झा, *अध्यापिका*, मीरांबिका स्कूल, नयी दिल्ली
Nutan Jha, *Teacher*, Mirambika School, New Delhi

प्रयाग शुक्ल, *संपादक*, रंग-प्रसंग, राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय, नयी दिल्ली
Prayag Shukl, *Editor*, *Rang Prasang*, National School of Drama, New Delhi

शारदा, *वरिष्ठ प्रवक्ता*, डाइट, आर.के. पुरम्, नयी दिल्ली
Sharda, *Sr. Lecturer*, DIET, R.K.Puram, New Delhi

सुकृता पॉल कुमार, *रीडर*, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली
Sukrita Paul Kumar, *Reader*, University of Delhi, Delhi

हेमा राघवन, *पूर्व डीन,* छात्र कल्याण, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली
Hema Raghavan, *Former Dean of Students' Welfare*, University of Delhi, Delhi

सदस्य समन्वयक/MEMBER–COORDINATORS

संध्या सिंह, *प्रोफ़ेसर,* भाषा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी.,नयी दिल्ली
Sandhya Singh, *Professor*, Department of Languages, NCERT, New Delhi

कीर्ति कपूर, *प्रोफ़ेसर,* भाषा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली
Kirti Kapur, *Professor*, Department of Languages, NCERT, New Delhi

आभार

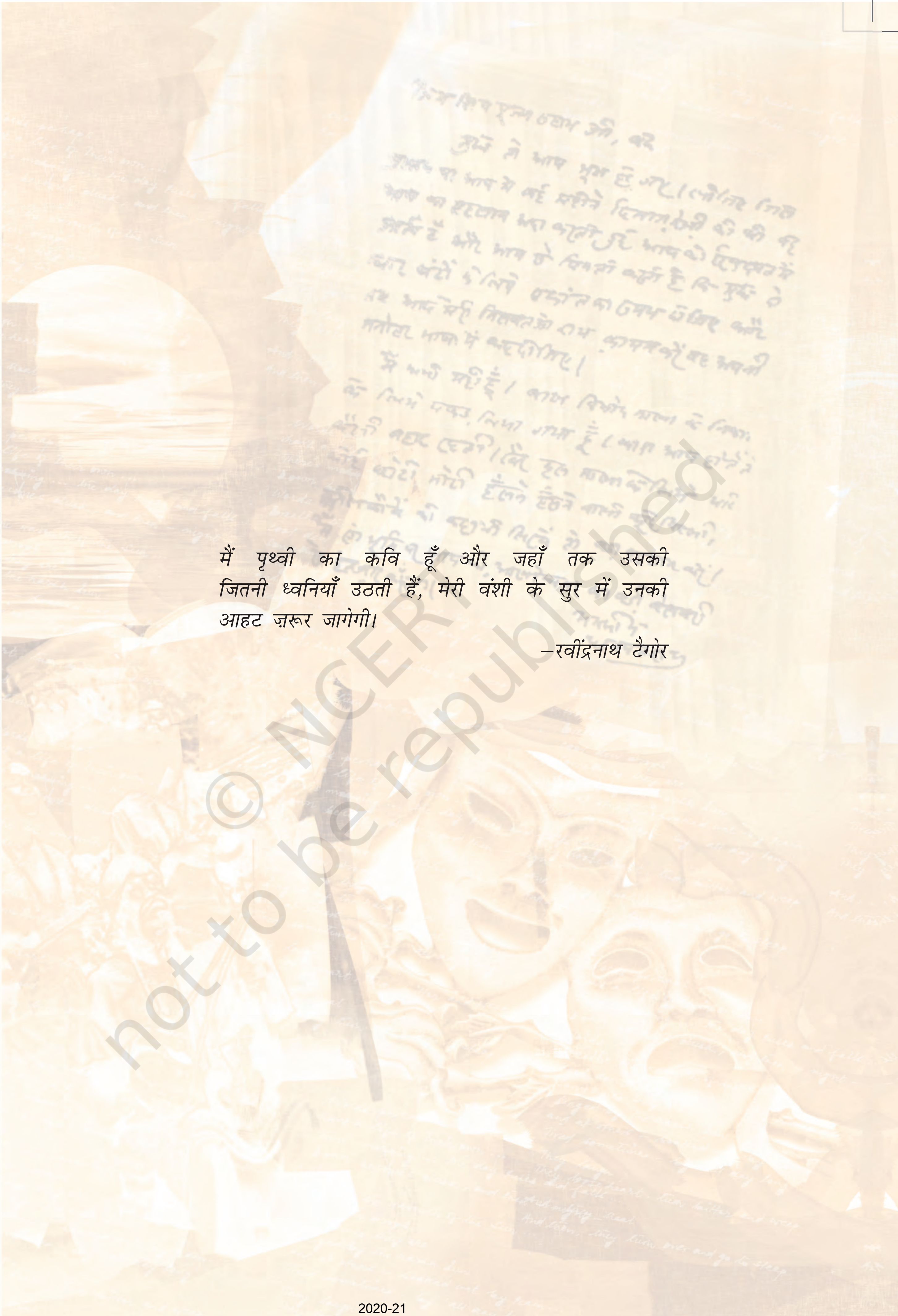
इस पुस्तक के निर्माण में सामग्री सहयोग के लिए नेहरू मेमोरियल संग्रहालय एवं पुस्तकालय, नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी; फ़ोटोग्राफ़ के लिए राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय, नयी दिल्ली, सरदार पटेल विद्यालय, नयी दिल्ली, मोनालिसा की फ़ोटोग्राफ़ के लिए दिलीप चिंचालकर, ख्याल परंपरा के चित्रों के लिए मधुमती पत्रिका, लाफ्टर एंड दी कारपेंटर के लिए नेशनल गैलरी ऑफ मॉडर्न आर्ट, रयून स्टोन के लिए बेरिग, अजंता के गुफ़ा-चित्र के लिए भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण, रोमन कॉलोसियम के लिए फ्यूबर ऑफुस्को, कुडियट्टम के लिए श्रीकांत वी, 'एगमार्क' के लिए कृषि एवं सहकारिता विभाग तथा 'लाडली' के लिए महिला एवं बाल विकास विभाग के प्रति हम विशेष आभारी हैं।

इसके निर्माण में तकनीकी सहयोग के लिए परिषद् कंप्यूटर स्टेशन (भाषा विभाग) के *प्रभारी* परशराम कौशिक; *डी.टी.पी. ऑपरेटर* सचिन कुमार और विजय कुमार; *कॉपी एडीटर* पूजा नेगी और नीना चंद्रा के सहयोग के लिए हम कृतज्ञ हैं।

ACKNOWLEDGEMENT

For permission to reproduce copyright pictures in this book, NCERT would like to thank the National Gallery of Modern Art, New Delhi for 'Laughter' and 'The Carpenter'; Berig for 'Rune Stone'; Archaeological Survey of India for the painting from the Ajanta Caves; Fubar Obfusco for 'the Colosseum', Rome; Sreekanth V. for 'Kudiyattam Performace'; Dilip Chinchalkar for the photograph of 'Mona Lisa'; *Madhumati Patrika* for the pictures of 'Khayal'; the National School of Drama, New Delhi; Sardar Patel Vidyalaya, New Delhi; Department of Agriculture and Cooperation for 'AGMARK'; and Department of Women and Child Development for 'Ladli'. NCERT would also like to thank Nehru Memorial Museum and Library, and Nagri Pracharini Sabha for providing material for this book.

The Council also acknowledges the services of Parash Ram Kaushik, *Incharge*, Computer Station, NCERT; Neena Chandra and Pooja Negi, *Copy Editors*; Sachin Kumar and Vijay Kumar, *DTP Operators*.



मैं पृथ्वी का कवि हूँ और जहाँ तक उसकी जितनी ध्वनियाँ उठती हैं, मेरी वंशी के सुर में उनकी आहट ज़रूर जागेगी।

–रवींद्रनाथ टैगोर

विषय सूची/Contents

All men [human beings] have poetry in their hearts, and it is necessary for them, as much as possible, to express their feelings. For this they must have a medium, moving and pliant, which can refreshingly become their own, age after age.

—**Rabindranath Tagore**